मग्नोपनिषद्
महोपाध्याय श्री यशोविजयगणिवराः
MAGNOPANISHAD

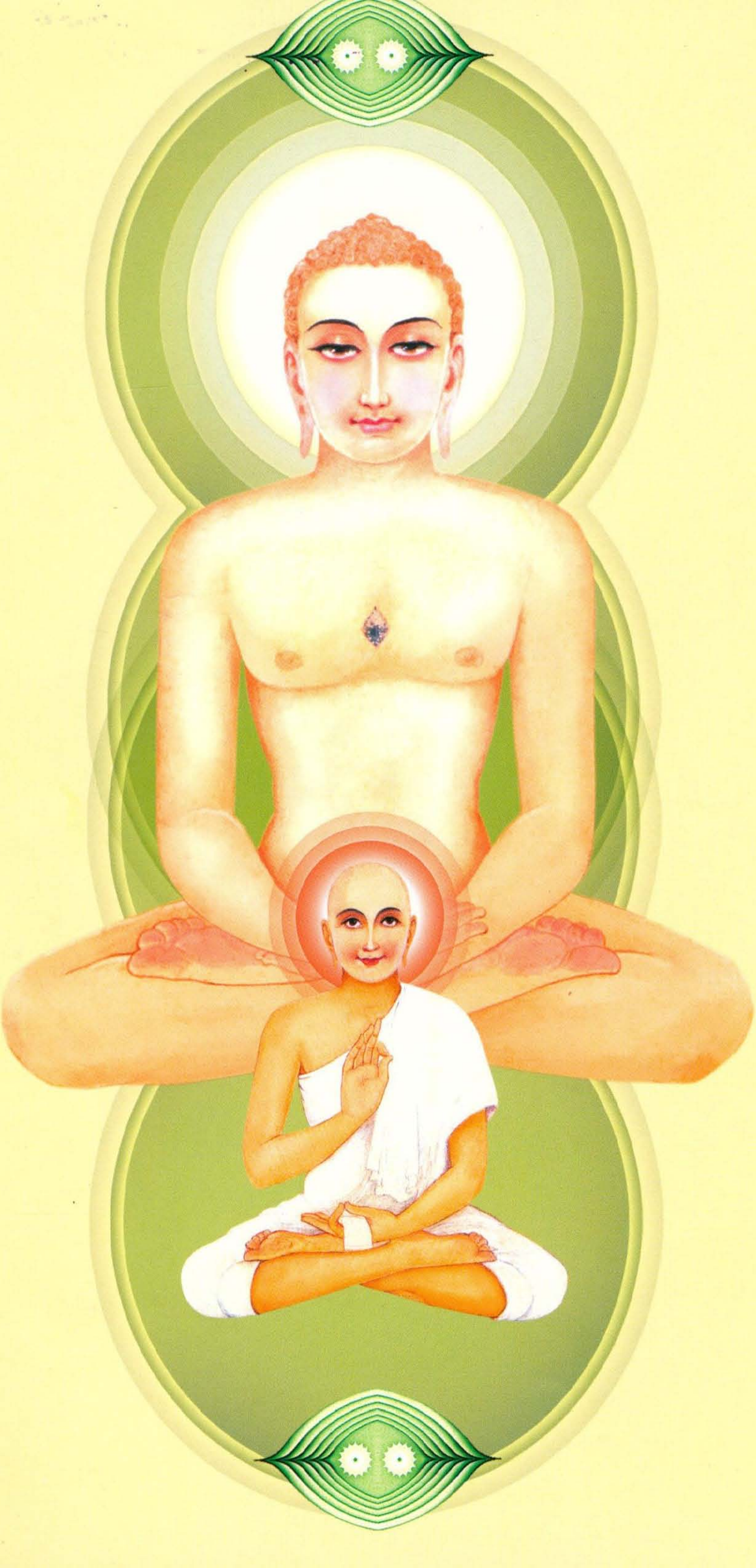

णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

श्री प्रेम-भुवनभानु-पद्म-जयघोषसूरिभ्यो नमः

श्री भुवनभानुसूरि जन्मशताब्दी पर नया नजराना-७३

न्यायविशारद-न्यायाचार्य-लघुहरिभद्र-महोपाध्याय

श्री यशोविजयगणिवर विरचित-ज्ञानसारान्तर्गत-

मग्नाष्टकस्य सानुवाद-सचित्र-प्रस्तुतिरूपा

मग्नोपनिषद्

हिन्दी-गुजराती अनुवादः + चित्रनिर्देशनम् + सम्पादनम्

प्राचीनश्रुतोद्धारक प. पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय हेमचन्द्रसूरीश्वर शिष्य

आचार्य विजय कल्याणबोधिसूरीश्वराः

प्रकाशक

श्री जिनशासन आराधना ट्रस्ट

पुस्तक का नाम	:	मग्नोपनिषद्
मूल कृति	:	ज्ञानसार प्रकरण अंतर्गत मग्नाष्टक
मूल कृतिकार	:	न्यायविशारद न्यायाचार्य लघुहरिभद्र महोपाध्याय श्री यशोविजयजी महाराज
हिन्दी-गुजराती अनुवाद + चित्रनिर्देशन + संपादनम्	:	प्राचीन श्रुतोद्धारक प. पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय हेमचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के शिष्य प. पू. आचार्यदेव श्रीमद्विजय कल्याणबोधिसूरीश्वरजी महाराज
अंग्रेजी अनुवाद	:	श्री मनीशभाई मोदी
विषय	:	मग्नता
विशेषता	:	परमानंद की मस्ती, महानंद की मनोहरता एवं जीवनमुक्ति की अनुभूति करने के लिये एक अनुपम आलंबन । सुगम अनुवाद एवं हृदयंगम चित्रों के साथ प्रथम प्रस्तुति ।
		वि. सं. २०६७, प्रथम आवृत्ति, १००० प्रति
मूल्य	:	७५/-
प्रकाशक	:	श्री जिनशासन आराधना ट्रस्ट

(C) All rights reserved

सुकृत सहयोगी

श्री वासुपूज्यस्वामि जैन देरासर

कर्वे रोड, पुना.

प्रेरक

प. पू. मुनिराजश्री ज्ञानप्रेम वि. म. सा.

प. पू. मुनिराजश्री हितप्रेम वि. म. सा.

प्राप्तिस्थान

श्री जिनशासन आराधना ट्रस्ट, श्री अक्षयभाई शाह

506, पद्म अेपार्ट, जैन देरासर के सामने, सर्वोदयनगर, मुलुंड (प.),
मुंबई-400 080. मो.: 9594555505. Email : jinshasan108@gmail.com

श्री बाबुभाई बेडावाला

सिध्दायल बंग्लोझ, सेन्ट अेन हाईस्कूल पासे, हीरा जैन सोसायटी, साबरमती,
अमदाबाद-380 005. मो.: 9426585904. Email : ahoshrut.bs@gmail.com

श्री चंद्रकांतभाई एस. संघवी

6-बी, अशोका कोम्पलेक्स, जनता होस्पिटल के पास, पाटण, उत्तर गुजरात. मो.: 9909468572

मल्टी ग्राफिक्स

18, Khotachi Wadi, Vardhaman Bldg., 3rd Floor, V. P. Road,
Prarthana Samaj, Mumbai - 400 004. Ph.: 23873222 / 23884222.
E-mail : support@multygraphics.com • www.multygraphics.com

मौज मग्नता की...

भवसागर
को तरने का केवल एक
ही उपाय है... आत्मसागर में डूब
जाओ... परमानन्द... परमसुख... परम
अनुभूति... परम समाधि... जो भी कहो, वह
इस डुबकी में है और जो आत्मसागर में नही
डूबा, वह बाह्य विश्व में चाहे कितना भी प्रतिष्ठित
व्यक्ति क्यों न हो, उसका जीवन व्यर्थ है। बिल्कुल
व्यर्थ... डूबने के यही रहस्य का उपहार आप
के हाथों में है। कहीं रह न जाओ...

- आ. कल्याणबोधिसूरि

ભવસાગરને તરવાનો માત્ર એક જ
ઉપાય છે... આત્મસાગરમાં ડુબી જાઓ...
પરમાનંદ... પરમસુખ... પરમ અનુભૂતિ...
પરમ સમાધિ... જે પણ કહો, એ આ ડુબકીમાં છે
અને જેણે આ ડુબકી નથી લગાડી, એ ચાહે બાહ્ય
જગતમાં કોઈપણ હોય, એનું જીવન વ્યર્થ છે. તદ્દન
વ્યર્થ... ડુબકીના આ જ રહસ્યનો ઉપહાર
આપના હાથમાં છે. રખે રહી જતાં...

– આ. કલ્યાણબોધિસૂરિ

Can any spiritual benefit be derived without self-immersion? Supreme bliss... Supreme happiness... Supreme awareness... Supreme immersion... call it whatever you like, it is this complete immersion in the self that leads to true bliss. One who has not immersed oneself in the atman, has wasted this life. Irrespective of his/her worldly achievements, his spiritual quotient will remain nil. And one who has dipped in the nectar of the atman, has attained the jewel of treasures, self-realisation. So come, immerse yourself in your divine atman.

मग्नाष्टकम्

प्रत्याहृत्येन्द्रियव्यूहं, समाधाय मनो निजम् ।
दधच्चिन्मात्रविश्रान्तिं, मग्न इत्यभिधीयते ।।१।।

यस्य ज्ञानसुधासिन्धौ, परब्रह्मणि मग्नता ।
विषयान्तरसञ्चार – स्तस्य हालाहलोपमः ।।२।।

फस्वभावसुखमग्नस्य, जगत्तत्त्वावलोकिनः ।
कर्तृत्वं नान्यभावानां, साक्षित्वमवशिष्यते ।।३।।

परब्रह्मणि मग्नस्य, श्लथा पौद्गलिकी कथा ।
क्वामी चामीकरोन्मादाः, स्फारा दारादराः क्व च ? ।।४।।

तेजोलेश्याविवृद्धिर्या, साधोः पर्यायवृद्धितः ।
भाषिता भगवत्यादौ, सेत्थम्भूतस्य युज्यते ।।५।।

ज्ञानमग्नस्य यच्छर्म, तद् वक्तुं नैव शक्यते ।
नोपमेयं प्रियाश्लेषै – र्नापि तच्चन्दनद्रवैः ।।६।।

शमशैत्यपुषो यस्य, विप्रुषोऽपि महाकथा ।
किं स्तुमो ज्ञानपीयूषे, तत्र सर्वाङ्गमग्नताम् ? ।।७।।

यस्य दृष्टिः कृपावृष्टि – र्गिरः शमसुधाकिरः ।
तस्मै नमः शुभज्ञान – ध्यानमग्नाय योगिने ।।८।।

प्रत्याहृत्येन्द्रियव्यूहं, समाधाय मनो निजम्।
दधच्चिन्मात्रविश्रान्तिं, मग्न इत्यभिधीयते।।१।।

शब्द आदि विषयों के प्रति
आकर्षित इन्द्रियों का
जिसने आत्मा के प्रति संहरण किया है,
जिसने अपने मन को समाधि में प्रतिष्ठित किया है,
एवं जो ज्ञान में ही विश्रान्ति लेता है,
उसे कहते है मग्न ।

શબ્દ વગેરે વિષયો પ્રત્યે
આકર્ષિત ઈન્દ્રિયોનું
જેણે આત્મા પ્રત્યે સંહરણ કર્યું છે,
જેણે પોતાના મનને
સમાધિમાં પ્રતિષ્ઠિત કર્યું છે,
તથા જે જ્ઞાનમાં જ વિશ્રાન્તિ લે છે,
એને કહેવાય છે મગ્ન.

One who has focused his senses,
which tend to be attracted
to words and other objects, towards his soul,
one who has stilled his mind in contemplation,
and finds peace in knowledge only,
is called self-immersed.

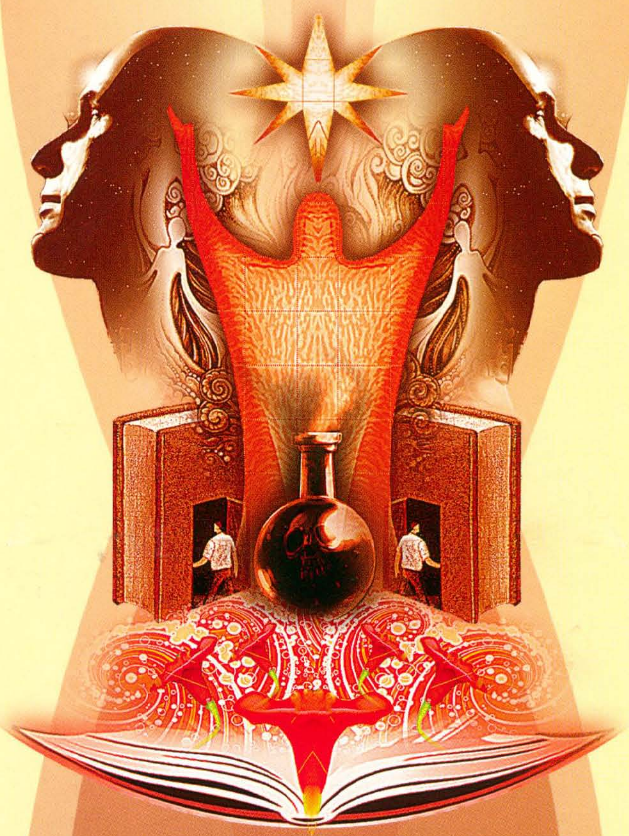

यस्य ज्ञानसुधासिन्धौ, परब्रह्मणि मग्नता।
विषयान्तरसञ्चार–स्तस्य हालाहलोपमः।।२।।

ज्ञान है एक सुधा का सागर,
यही है परम ब्रह्म। जो इसमें मग्न हुआ है,
उसे कभी बाह्य भाव में
संचार नहीं करना चाहिये,
क्योंकि यह तो वह ज़हर है,
जो आत्मसाधक के प्राण हर लेता है।

જ્ઞાન છે એક સુધાનો સાગર,
આ જ છે પરમ બ્રહ્મ.
જે એમાં મગ્ન બન્યો છે,
એણે કદી બાહ્ય ભાવમાં
સંચાર ન કરવો જોઈએ,
કારણ કે આ તો તે ઝેર છે,
જે આત્મસાધકના પ્રાણ હરી લે છે.

Knowledge is like
an ocean of nectar.
It is the supreme divinity.
One who is immersed in it,
should never be concerned
with external dispositions,
for they are the poison
that takes the life of
a spiritual mendicant.

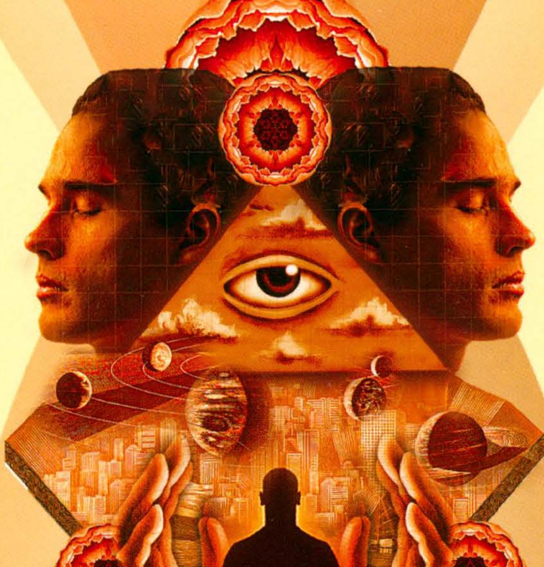

स्वभावसुखमग्नस्य, जगत्तत्त्वावलोकिनः।
कर्तृत्वं नान्यभावानां, साक्षित्वमवशिष्यते।।३।।

जो आत्मस्वभाव के
अनुपम सुख में मग्न है,
जो विश्वतत्त्व का दर्शन करता है,
वह किसी भी बाह्य प्रवृत्ति का कर्ता नहीं,
वह तो है केवल साक्षी।

જે આત્મસ્વભાવના
અનુપમ સુખમાં મગ્ન છે,
જે વિશ્વતત્ત્વનું દર્શન કરે છે,
તે કોઈ પણ બાહ્ય પ્રવૃત્તિનો કર્તા નથી,
તે તો છે માત્ર સાક્ષી.

One who is immersed
in the unequalled bliss
of the true nature of the soul,
one who can perceive the world
in its vast, immense reality,
cannot be the doer of any
external activities.
He is the witness only.

परब्रह्मणि मग्नस्य,
श्लथा पौद्गलिकी कथा।
क्वामी चामीकरोन्मादाः,
स्फारा दारादराः क्व च ? ।।४।।

जो परम ब्रह्म के परमानंद में मग्न है,
उसके वचन में पुद्गलों की
तुच्छ बातें कैसे आ सकती हैं?
सुवर्ण-समृद्धि के प्रति उसका
पागलपन भी कैसे हो सकता है?
एवं कामिनी के प्रति उसका
लगाव भी कैसे हो सकता है?

જે પરમબ્રહ્મના
પરમાનંદમાં મગ્ન છે,
તેના વચનમાં પુદ્‌ગલોની
તુચ્છ વાતો શી રીતે હોઈ શકે?
સુવર્ણ–સમૃદ્ધિની પાછળ
એ પાગલ પણ શી રીતે બને?
અને કામિની પ્રત્યે
તેનો લગાવ પણ શી રીતે હોઈ શકે?

How can one who is immersed,
in the immense bliss of
the supreme divinity,
talk about lowly material things?
How could he have the lunatic
desire for gold and wealth?
And how could he long
for a beauteous maiden?

भगवतीसूत्र आगम
आदि शास्त्रों में कहा है, कि
श्रमण के संयमपर्याय की
जैसे जैसे वृद्धि होती है,
वैसे वैसे उसकी तेजोलेश्या
की भी वृद्धि होती है,
उसका सुख
बढ़ता ही जाता है,
यह बात है परमब्रह्म में
निमग्न साधक की।

तेजोलेश्याविवृद्धिर्या, साधोः पर्यायवृद्धितः।
भाषिता भगवत्यादौ, सेत्थम्भूतस्य युज्यते।।५।।

For the votary immersed
in the supreme divinity,
it is said in the Bhagavati Sutra
and other agamas,
that as the duration of
ascetic vows increases,
his tejoleshya {mystic ability}
also increases.
His happiness is
constantly increasing.

ભગવતી સૂત્ર આગમ
આદિ શાસ્ત્રોમાં કહ્યું છે કે
શ્રમણના સંયમપર્યાયની
જેમ જેમ વૃદ્ધિ થાય છે,
તેમ તેમ તેની તેજોલેશ્યાની
પણ વૃદ્ધિ થાય છે,
એનું સુખ વધતું જ જાય છે.
આ વાત છે પરમબ્રહ્મમાં
નિમગ્ન સાધકની.

ज्ञानमग्नस्य यच्छर्म, तद् वक्तुं नैव शक्यते।
नोपमेयं प्रियाश्लेषै–र्नापि तच्चन्दनद्रवैः।।६।।

जो ज्ञान में मग्न है,
उसके सुख का वर्णन
करना मुमकिन नहीं है,
यह सुख इतना कल्पनातीत है,
कि न तो इसे प्रिया के
आलिंगन जैसा कह सकते हैं,
न ही चन्दन रस के
विलेपन जैसा कह सकते हैं।

જે જ્ઞાનમાં મગ્ન છે,
તેના સુખનું વર્ણન કરવું શક્ય નથી.
આ સુખ એટલું કલ્પનાતીત છે,
કે ન તો એને પ્રિયાના
આલિંગન જેવું કહી શકાય,
કે ન તો ચંદનરસના
વિલેપન જેવું કહી શકાય.

It is impossible to
describe the happiness of one
who is immersed in knowledge.
His happiness is utterly
beyond description.
It can neither be described
as the embrace of the beloved,
nor as massage with
sandalwood paste.

शमशैत्यपुषो यस्य,
विप्रुषोऽपि महाकथा।
किं स्तुमो ज्ञानपीयूषे,
तत्र सर्वाङ्गमग्नताम्!।।७।।

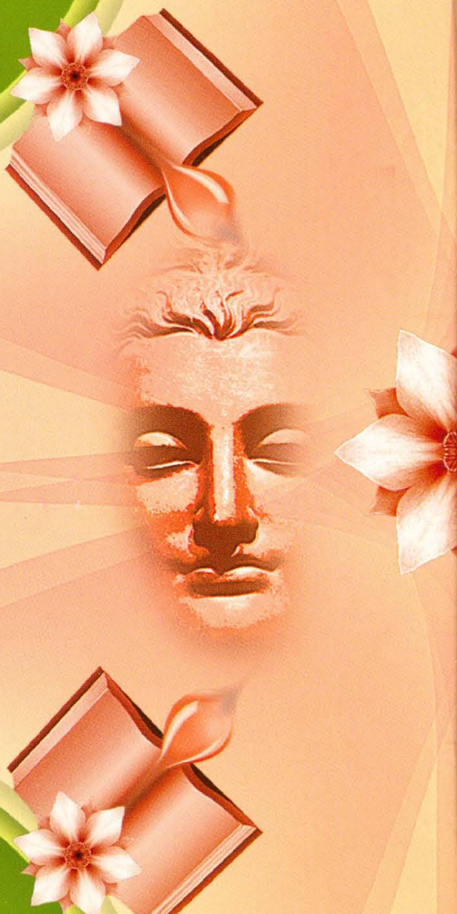

ज्ञान एक ऐसा अमृत है,
जिसके एक बूंद की भी भारी महिमा है।
वह भी प्रशमसुख की
शीतलता की पुष्टि करता है।
तो फिर उस ज्ञानामृत में
जो सर्वांग निमग्नता हो,
उसकी तो हम क्याँ प्रशंसा करे?

જ્ઞાન એક એવું અમૃત છે,
જેના એક ટીપાનો પણ મોટો મહિમા છે,
એ પણ પ્રશમસુખની
શીતળતાની પુષ્ટિ કરે છે.
તો પછી એ જ્ઞાનામૃતમાં
જે સર્વાંગ નિમગ્નતા હોય,
એની તો અમે શું પ્રશંસા કરીએ?

Knowledge is such a nectar,
even one drop has
tremendous importance.
It strengthens the soothing coolness,
of the bliss of equanimity.
What can one say in praise of
one who is completely immersed
in the nectar of knowledge?

यस्य दृष्टिः कृपावृष्टि–र्गिरः शमसुधाकिरः।
तस्मै नमः शुभज्ञान–ध्यानमग्नाय योगिने ।।८।।

जिन की दृष्टि कृपा की वृष्टि है,
जिन की वाणी प्रशम सुधा की बौछार करती है,
जो शुभ ज्ञान-ध्यान में मग्न है,
ऐसे ओ योगी ! आप को हमारे
लाख लाख नमस्कार है।

જેમની દષ્ટિ કૃપાની વૃષ્ટિ છે,
જેમની વાણી પ્રશમ સુધાના છાંટણા કરે છે,
જે શુભ જ્ઞાન-ધ્યાનમાં મગ્ન છે,
એવા ઓ યોગી ! આપને અમારા
લાખ લાખ નમસ્કાર છે.

Those, whose very glance is
like the rainfall of blessings,
whose words shower down
the nectar of equanimity and
who are immersed in auspicious
knowledge and meditation,
we genuflect a hundred thousand
times, before such Yogis.

सुख की सरिता, धन्यता की धारा,
और परमानंद
की प्रणाली...
वह बह रही है, हम मग्न हो जाये...

MULTY GRAPHICS
(022) 23873222 23884222